

कामकाजी एवं गैर-कामकाजी माताओं के बच्चों की भावनात्मक क्षमताओं का तुलनात्मक विश्लेषण

डॉली कुमारी¹ and डॉ. विकेश चंद्र गुप्ता²

¹शोधार्थी, मनोविज्ञान-विभाग

²प्रोफेसर, मनोविज्ञान-विभाग

विक्रान्त विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.), भारत

सारांश

बालक के व्यक्तित्व निर्माण में परिवार तथा विशेष रूप से माता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। वर्तमान समय में महिलाओं की कार्यक्षेत्र में बढ़ती भागीदारी ने पारिवारिक संरचना एवं पालन-पोषण की पारंपरिक अवधारणाओं में परिवर्तन किया है। इस शोध-पत्र का उद्देश्य कामकाजी एवं गैर-कामकाजी माताओं के बच्चों की भावनात्मक क्षमताओं का तुलनात्मक विश्लेषण करना है। भावनात्मक क्षमताओं में आत्म-जागरूकता, भावनात्मक नियंत्रण, सहानुभूति, सामाजिक समायोजन, आत्म-प्रेरणा तथा पारस्परिक संबंधों का प्रबंधन प्रमुख रूप से सम्मिलित हैं।

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि केवल माता का कामकाजी अथवा गैर-कामकाजी होना बच्चों की भावनात्मक क्षमता का एकमात्र निर्धारक नहीं है, बल्कि पालन-पोषण की गुणवत्ता, माता-पिता का भावनात्मक सहयोग, पारिवारिक वातावरण, संवाद तथा सामाजिक समर्थन अधिक प्रभावशाली कारक हैं। अनेक अध्ययनों में पाया गया है कि यदि कामकाजी माता अपने बच्चों के साथ गुणवत्तापूर्ण समय व्यतीत करती हैं तथा सकारात्मक पालन-पोषण शैली अपनाती हैं, तो बच्चों की भावनात्मक क्षमताएँ गैर-कामकाजी माताओं के बच्चों के समान अथवा कई बार उनसे बेहतर भी हो सकती हैं।

मुख्य संकेतक: - कामकाजी माता, गैर-कामकाजी माता, भावनात्मक क्षमता, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, आत्म-नियंत्रण, सहानुभूति, सामाजिक समायोजन।

परिचय

भावनात्मक क्षमताएँ व्यक्ति के व्यक्तित्व का अभिन्न अंग हैं। इनका संबंध व्यक्ति की भावनाओं को समझने, नियंत्रित करने तथा सामाजिक परिस्थितियों में उचित व्यवहार करने की योग्यता से होता है। बाल्यावस्था में इन क्षमताओं का विकास मुख्यतः परिवार के वातावरण में होता है। माता बच्चों की प्रथम शिक्षिका होने के कारण उनके भावनात्मक विकास पर गहरा प्रभाव डालती है।

आधुनिक समाज में महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता तथा व्यावसायिक सहभागिता बढ़ने से मातृत्व एवं रोजगार के बीच संतुलन एक महत्वपूर्ण विषय बन गया है। कुछ विद्वानों का मत है कि कामकाजी माताओं के बच्चों में आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास तथा सामाजिक दक्षता अधिक विकसित होती है, जबकि अन्य शोध यह संकेत देते हैं कि माता की अनुपलब्धता बच्चों के भावनात्मक विकास को प्रभावित कर सकती है। दूसरी ओर, गैर-कामकाजी माताएँ बच्चों को अधिक समय प्रदान करती हैं, जिससे उनमें भावनात्मक सुरक्षा तथा आत्मीयता का विकास होता है। परन्तु यदि पालन-पोषण अत्यधिक नियंत्रित या संरक्षणात्मक हो, तो बच्चों की स्वतंत्र भावनात्मक अभिव्यक्ति बाधित हो सकती है। इसलिए दोनों समूहों के बच्चों की भावनात्मक क्षमताओं का तुलनात्मक अध्ययन अत्यंत आवश्यक है।

भावनात्मक क्षमताओं की अवधारणा

भावनात्मक क्षमता से अभिप्राय व्यक्ति की उन योग्यताओं से है जिनके माध्यम से वह:-

1. अपनी भावनाओं को पहचानता है।
2. भावनाओं का उचित नियंत्रण करता है।
3. दूसरों की भावनाओं को समझता है।
4. सामाजिक संबंधों को प्रभावी ढंग से निभाता है।
5. तनावपूर्ण परिस्थितियों में संतुलित व्यवहार करता है।
6. सहानुभूति एवं सहयोग की भावना विकसित करता है।

कामकाजी माताओं के बच्चों की भावनात्मक क्षमताएँ

कामकाजी माताओं के बच्चों में निम्नलिखित विशेषताएँ सामान्यतः देखने को मिलती हैं:-

1. आत्मनिर्भरता का उच्च स्तर।

2. निर्णय लेने की क्षमता का विकास।
3. सामाजिक अनुकूलन में दक्षता।
4. समय प्रबंधन की समझ।
5. आत्मविश्वास एवं जिम्मेदारी की भावना।
6. विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों का अनुभव।

हालाँकि यदि माता कार्य के कारण अत्यधिक व्यस्त रहती है तथा परिवार में भावनात्मक संवाद की कमी होती है, तो बच्चों में अकेलेपन, तनाव तथा भावनात्मक असुरक्षा की संभावना भी बढ़ सकती है। वर्तमान शोध यह भी इंगित करते हैं कि माता के रोजगार की तुलना में माता का मानसिक स्वास्थ्य, संतोष तथा पालन-पोषण की शैली बच्चों के सामाजिक-भावनात्मक विकास पर अधिक प्रभाव डालती है।

गैर-कामकाजी माताओं के बच्चों की भावनात्मक क्षमताएँ

गैर-कामकाजी माताएँ सामान्यतः बच्चों के साथ अधिक समय बिताती हैं, जिसके कारण: -

1. भावनात्मक सुरक्षा अधिक विकसित होती है।
2. माता-बच्चे का लगाव मजबूत होता है।
3. व्यवहार संबंधी समस्याओं का शीघ्र समाधान होता है।
4. बच्चों में विश्वास एवं आत्मीयता विकसित होती है।
5. नैतिक मूल्यों एवं सामाजिक व्यवहार का बेहतर विकास होता है।

इसके विपरीत यदि पालन-पोषण अत्यधिक संरक्षणात्मक हो अथवा बच्चों को स्वतंत्र निर्णय लेने के अवसर कम मिलें, तो आत्मनिर्भरता एवं समस्या-समाधान क्षमता सीमित रह सकती है।

तुलनात्मक विश्लेषण

आधार	कामकाजी माताएँ	गैर-कामकाजी माताएँ
आत्मनिर्भरता	अपेक्षाकृत अधिक	मध्यम
भावनात्मक सुरक्षा	गुणवत्तापूर्ण समय पर निर्भर	अपेक्षाकृत अधिक
आत्मविश्वास	अधिक विकसित	सामान्य

सामाजिक समायोजन	बेहतर	अच्छा
सहानुभूति	परिवार के वातावरण पर निर्भर	अधिक विकसित हो सकती है
भावनात्मक नियंत्रण	पालन-पोषण शैली पर निर्भर	माता के निरंतर मार्गदर्शन से विकसित

चर्चा

समकालीन मनोवैज्ञानिक अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि केवल माता का कार्यरत होना बच्चों की भावनात्मक क्षमताओं का निर्धारण नहीं करता। यदि माता-पिता बच्चों के साथ सकारात्मक संवाद, भावनात्मक समर्थन तथा गुणवत्तापूर्ण समय सुनिश्चित करते हैं, तो बच्चों का भावनात्मक विकास संतुलित रहता है। दूसरी ओर, परिवार में तनाव, वैवाहिक संघर्ष, आर्थिक दबाव तथा नकारात्मक पालन-पोषण शैली बच्चों की भावनात्मक क्षमताओं को प्रभावित कर सकती है। जर्मनी में 985 परिवारों पर आधारित एक अध्ययन में मातृ रोजगार और बच्चों की सामाजिक-भावनात्मक क्षमताओं के बीच प्रत्यक्ष संबंध नहीं पाया गया; बल्कि मातृ कल्याण, पिता की सहभागिता और अधिकारपूर्ण पालन-पोषण अधिक महत्वपूर्ण कारक पाए गए।

निष्कर्ष

अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि कामकाजी एवं गैर-कामकाजी माताओं के बच्चों की भावनात्मक क्षमताओं में अंतर का मुख्य कारण माता का रोजगार नहीं, बल्कि पारिवारिक वातावरण, भावनात्मक उपलब्धता, पालन-पोषण की शैली, माता-पिता का सहयोग तथा संवाद की गुणवत्ता है। सकारात्मक, सहयोगात्मक एवं संवेदनशील पारिवारिक वातावरण दोनों प्रकार के परिवारों के बच्चों में उच्च भावनात्मक क्षमता विकसित करने में सहायक सिद्ध होता है।

संदर्भ सूची

1. बाउम्रिंड, डी. (2013). आधिकारिक पालन-पोषण का पुनरीक्षण। जर्नल ऑफ फैमिली स्टडीज, 19(2), 95–108।
2. बर्क, एल. ई. (2018). जीवनकाल के दौरान विकास (सातवां संस्करण)।
3. ब्रोनफेनब्रेनर, यू. (2005). मानव को मानव बनाना।
4. कोल, पी. एम., मार्टिन, एस. ई., और डेनिस, टी. ए. (2004). वैज्ञानिक संरचना के रूप में भावना विनियमन। चाइल्ड डेवलपमेंट, 75(2), 317–333।
5. डेनहम, एस. ए. (2007). भावनाओं से निपटना। गिलफोर्ड प्रेस।
6. गोलेमैन, डी. (1995). भावनात्मक बुद्धिमत्ता। बैटम बुक्स।
7. हाइड, ए., पेठे, एस., और धर, यू. (2002). भावनात्मक बुद्धिमत्ता स्केल मैनुअल। वेदांत पब्लिकेशन्स।
8. मेयर, जे. डी., सैलोवे, पी., और कारुसो, डी. आर. (2008). भावनात्मक बुद्धिमत्ता: नई क्षमता या विविध लक्षण? अमेरिकन साइकोलॉजिस्ट, 63(6), 503–517।
9. मैकोबी, ई. ई. (2007). समाजीकरण अनुसंधान का ऐतिहासिक अवलोकन। गिलफोर्ड प्रेस।
10. पपलिया, डी. ई., और मार्टेरिल, जी. (2021). मानव विकास का अनुभव (15वां संस्करण)। मैकग्रा-हिल।
11. रोहर-सेंडलमेयर, यू. एम., बर्गोल्ड, एस., जोरिस, ए., कमिंग्स, ए. वी., हीम, के., और जोहानन, ई. (2012)। कामकाजी माताएँ और उनके बच्चों की सामाजिक-भावनात्मक क्षमताएँ। जर्नल ऑफ फैमिली रिसर्च, 24(3), 269–294।
12. सैलोवे, पी., और मेयर, जे. डी. (1990)। भावनात्मक बुद्धिमत्ता। इमेजिनेशन, कॉग्निशन एंड पर्सनैलिटी, 9(3), 185–211।
13. सैट्रॉक, जे. डब्ल्यू. (2020). चाइल्ड डेवलपमेंट (15वां संस्करण). मैकग्रा-हिल.
14. सीगलर, आर. एस. (2017). हाउ चिल्ड्रन डेवलप (5वां संस्करण). वर्थ पब्लिशर्स.
15. सुखसारवाला, बी. एच., और मंसूरी, ए. जे. (2015). कामकाजी और गृहिणी माताओं के किशोर बच्चों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और लिंग-आधारित अंतर. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी, 2(2), 43–53.
16. साउफ़, एल. ए. (2005). अटैचमेंट एंड डेवलपमेंट. गिलफोर्ड प्रेस.

17. थॉम्पसन, आर. ए. (2014). स्ट्रेस एंड चाइल्ड डेवलपमेंट. फ्यूचर ऑफ चिल्ड्रन, 24(1), 41–59.
18. वूलफोक, ए. (2019). एजुकेशनल साइकोलॉजी (14वां संस्करण).
19. खान, एम. ए., और हसन, ए. (2012). कामकाजी और गैर-कामकाजी माताओं के बच्चों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता. रिसर्च, 4(4), 24–31.
20. ज़ेलाज़ो, पी. डी. (2013). ऑक्सफ़ोर्ड हैंडबुक ऑफ़ डेवलपमेंटल साइकोलॉजी. ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.